ओशोधाम
नई दिल्ली

ओशो के ध्यान उपवन

ओशो भक्ति ध्यान शिविर

गत 9 से 11 जून को ओशोधाम, नयी दिल्ली के भक्ति ध्यान शिविर में मानसून की बरसात तो नहीं हुई, लेकिन एक और वर्षा अवश्य हुई जो भक्ति और कीर्तन के रस से लबालब थी। 8 जून की संध्या को इस शिविर का शुभारंभ था। जून की इस भीषण गर्मी में गत वर्ष से दोगुना साधक आए, यह देखकर विस्मय हुआ।

ओशोधाम के हरे-भरे वातावरण में हुए ओशो भक्ति ध्यान शिविर का संचालन किया स्वामी चैतन्य कीर्ति ने और सहयोग दिया मा धर्म ज्योति ने। भक्ति-रस पर महर्षि शांडिल्य के सूत्रों पर

ओशो के प्रवचन तथा चुने हुए प्रश्नोत्तर प्रवचन उल्लेखनीय थे। ओशो की उपस्थिति में गाये हुए मा तरु के संकीर्तन पर साधक खूब नाचे, मस्त हुए और अंतिम दिन प्रातः ओशो राजयोग केन्द्र के प्रमोद व आनंद के साथ अनिल ने लाइव कीर्तन में नृत्य में साधकों की ऊर्जा ने शिखर छुए और उसके बाद मौन की अतल गहराइयों में डूब गए। भक्ति और ध्यान का यह अनूठा संगम था।

कसौली, शिमला

कसौली (शिमला) में 5 से 7 मई को ओशो ध्यान शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में लगभग विभिन्न प्रांतों जैसे हिमालय, पंजाब, दिल्ली, मध्य प्रदेश, गाज़ियाबाद से लगभग 70 साधकों ने कसौली के शांत व रमणिय वातावरण में खूब उत्सव मनाया। स्वामी आनंद स्वभाव ने ध्यान की गंगा में साधकों को गहरी डुबकी लगवाई। संन्यास दीक्षा में 7 मित्रों ने दीक्षा ली। बड़ी उमंग व उत्साह के साथ सभी साधकों ने आयोजक स्वामी मूलचन्द जैन एवम् स्वामी आनंद स्वभाव से भाव-भीनी विदाई ली।

– *अंतर विकास (रविकांत)*

नैनीताल, उत्तरांचल

ओशो ओम् प्रकाश कम्यून, भीमताल द्वारा 25 से 28 मई को आयोजित त्रिदिवसीय ओशो ध्यान योग शिविर ध्यान प्रयोगों एवं संन्यास दीक्षा उत्सव के साथ आज 28 मई को दोपहर 2.30 बजे संपन्न हुआ। शिविर के दौरान सक्रिय, कुंडलिनी, अनापान सति योग एवं विपस्सना ध्यान, नो-माइंड, मिस्टिक रोज, तथाता, नादब्रह्म ध्यान एवं संध्या सत्संग जैसे प्रयोग कराये गये। इनका संचालन स्वामी शून्यम् प्रकाश ने किया। शिविर में उत्तरांचल सहित उ.प्र., दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, बिहार, मध्य प्रदेश, गुजरात से आये प्रेमी एवं संन्यासी मित्रों ने भाग लिया और शिविर का समापन संन्यास दीक्षा के साथ संपन्न हुआ।

रूस

रूस में ओशो की लहर

वोल्गा नदी का यह महान प्रदेश जहां कभी कम्युनिस्टों के शासन में ध्यान भी चोरी-छुपे

करना पड़ता था, आज के खुले वातावरण में ओशो का कार्य द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है।

रूस स्थित ओशो प्रेमियों के आमंत्रण पर ओशो तपोवन से तीन संन्यासियों की टोली एक महीने के लिए ओशो कार्य विस्तार हेतु 3 जून से 2 जुलाई तक रूस में रही। 5, 6 जून मास्को में दो सांध्य सत्संग का आयोजन हुआ। प्रत्येक सत्संग में 120 मित्रों की उपस्थिति रही। 7 जून को नेपाली राजदूतावास ने एक स्वागत समारोह तथा प्रवचन कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें सैकडों नेपाली प्रवासी तथा रूसी संन्यासी मित्र सम्मिलित हुए। कार्यवाहक राजदूत श्री जीवन श्रेष्ठ ने एक स्वागत भोजन में सबका अभिवादन किया तथा तपोवन के सदस्यों को राजदूतावास में ही ठहरने का आमंत्रण दिया।

10-12 जून रूस के सबसे खूबसूरत और ऐतिहासिक शहर सेन्ट पीटरसबर्ग में साधना शिविर का आयोजन हुआ जिसमें 29 मित्रों ने संन्यास दीक्षा ली। 13 जून को संन्यासियों ने एक समुद्र तट पर एक पिकनिक मनाया।

रूस के रहस्यमय प्रदेश साइबेरिया के सबसे आधुनिक तथा संपन्न शहर नोभोसिबिरस्क के संन्यासियों ने शहर से 200 कि.मी. दूर एक विशाल झील के किनारे में अवस्थित रिसोर्ट में 15-18 जून साधना शिविर का आयोजन किया। इसमें 95 मित्रों ने भाग लिया तथा 42 मित्र दीक्षित हुए। यहां स्थानीय मित्रों ने स्वामी अरुण से एक नया ध्यान केन्द्र के लिए नाम देने का आग्रह किया और वहां ओशो आशीष ध्यान केन्द्र की स्थापना हुई।

21, 22, 29, 30 जून मास्को में सत्संग कार्यक्रम हुए तथा 23-27 जून शहर से 50 कि. मी. दूर मास्को नदी के सुंदर झील के किनारे अवस्थित 'बिन्योज्का' रिसोर्ट में पांच दिनों का ध्यान शिविर हुआ। इसमें 200 मित्रों ने भाग लिया। मास्को में 117 मित्रों ने दीक्षा ली तथा मास्को के आसपास 4 ओशो ध्यान केन्द्र खुले। दो केन्द्रों में रहने के लिए कमरे और ध्यान सभागार भी होगा। ओशो बुद्ध ध्यान केन्द्र और ओशो निर्वाण ध्यान केन्द्र में नियमित ध्यान व संध्या सत्संग कार्यक्रम किए जाएंगे। इस यात्रा के दौरान रूस में 188 मित्रों ने दीक्षा ली।

मास्को ध्यान शिविर में युक्रेन से आए मित्रों ने स्वामी अरुण को वहां की राजधानी किभ में शिविर के लिए आमंत्रित किया और सितंबर में वहां ध्यान शिविर का कार्यक्रम रखा है।

काशी, उ.प्र.

काशी, 4 जून। इस युग के प्रखरतम संबुद्ध रहस्यदर्शी ओशो ने काशी जैसे तीर्थों पर अपनी पुस्तक "मैं कहता आंखन देखी" में प्रकाश डाला है। ओशो की देशना के इस अंश पर ध्यान देते हुए स्वामी सहज संगीतम् के निर्देशन में लगभग 50 देशी-विदेशी मित्रों ने सप्ताह भर गंगा की धारा पर ध्यान करते हुए गंगा दर्शन एवं साधना का अनूठा अनुभव उठाया।

राजकोट, गुजरात

ओशो सत्य प्रकाश ध्यान मंदिर, राजकोट में 4 जून को अमेरिका से आई मा अझाती द्वारा एक दिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 70 ओशो प्रेमी व मित्र सम्मिलित हुए। मा अझाती पहले पूना आश्रम में थैरेपी ग्रुप में थीं। 18 साल से अमेरिका में रहकर वहां थैरेपी ग्रुप और ओशो ध्यान केन्द्र का संचालन कर रही हैं। उन्होंने शिविर में चक्रा साउंड, कुंडलिनी तथा

सांध्य सत्संग आदि ध्यान प्रयोग करवाए। संध्या सत्संग में 125 साधकों ने हिस्सा लिया।

तपोवन, नेपाल

बच्चों की निजता और स्वतंत्रता के ओशो एक बड़े हिमायती रहे हैं। ऐसे ही बच्चों का एक समूह 23 जून को अपने स्कूल की ओर से ओशो तपोवन में उपस्थित हुआ। प्रकृति के सान्निध्य में खेलना, नृत्य में डूबना, छोटी-छोटी विधियों का समग्रता से रसास्वादन करना उनके लिए सहज हुआ।

9-11 जून तक एक त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन हुआ। ओशो तपोवन के मनभावन वातावरण में स्वामी गोविन्द भारती ने ध्यान शिविर का सहज संचालन किया। 16 मित्रों ने संन्यास-दीक्षा ली।

देहरादून, उत्तरांचल

ओशो ओम् बोधिसत्व कम्यून, देहरादून में 9 से 11 जून के बीच बच्चों एवं अभिभावकों का ओशो ध्यान शिविर आयोजित हुआ।

ओशो कहते हैं, "बच्चों को बुद्धि की शिक्षा के साथ-साथ ध्यान की भी शिक्षा दें। जैसे-जैसे बच्चा विज्ञान को समझे वैसे-वैसे धर्म को भी समझे।"

इस अनूठे ध्यान-शिविर में देहरादून, हरिद्वार, ऋषिकेश, मेरठ, गाज़ियाबाद, दिल्ली, मुजफ्फरनगर, बरेली, लखनऊ, चंडीगढ़, पंचकूला, शिमला, मुक्तसर, नवांशहर, जालंधर, पंचकूला, शिमला, मुक्तसर, नवांशहर, जालंधर, अमृतसर, सहारनपुर आदि स्थानों से बच्चे, अभिभावक, संन्यासी एवं ओशो प्रेमी आये।

बच्चों के ध्यान शिविर का संचालन ओशो राजयोग ध्यान केन्द्र, नई दिल्ली से आये स्वामी अमित, स्वामी निशांत एवं मा देव दक्षिणा ने किया। अभिभावकों के ध्यान शिविर का संचालन स्वामी नरेन्द्र बोधिसत्व, स्वामी आत्मो निनाद, स्वामी शिव भारती एवं स्वामी निसंग तीर्थ ने किया।

ध्यान-शिविर के अंतिम दिवस पांच नये ओशो प्रेमियों को स्वामी नरेन्द्र बोधिसत्व ने संन्यास-दीक्षा दी, जिसमें एक बच्चा भी था। संन्यास-दीक्षा उत्सव, गीत-संगीत, नृत्य-उत्सव, आनंद-ऊर्जा से सराबोर था, सामूहिक ओशो-ऊर्जा का विस्फोट था।

जबलपुर, म.प्र.

ओशो अमृतधाम, देवताल जबलपुर में दिनांक 10 से 20 जून ओशो स्वदिशा बोध का आयोजन हुआ, जिसमें साधकों को स्वदर्शन योग, ओशो की आवाज में सक्रिय ध्यान, कुण्डलिनी एवं शारीरिक,

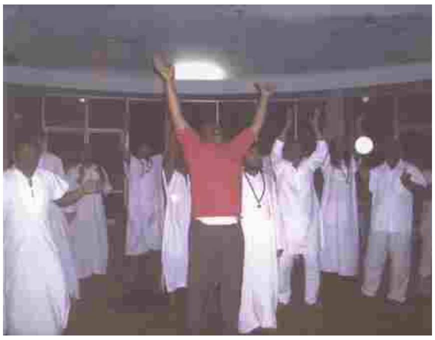

मानसिक शुद्धिकरण के अनूठे ध्यान प्रयोग करवाये गये।

दूसरे चरण (7 दिवसीय) में मित्रों को अवेयरनेस, द्रष्टा, साक्षी और श्वास के विभिन्न ध्यान प्रयोग करवाये गये, जिसमें साधकों ने अपने वास्तविक 'मैं कौन हूं' का अनुभव करते हुए अपने भीतर एक नयी जीवन ज्योति को जागृत किया।

— स्वामी चैतन्य शिखर, जबलपुर

मण्डी, हि.प्र.

एक दिवसीय ओशो ध्यान शिविर

ओशो इन्फॉरमेशन सेंटर, मंडी द्वारा 18 जून को एक दिवसीय ओशो ध्यान शिविर का आयोजन

किया गया। शिविर में करीब 30 ओशो प्रेमियों ने भाग लिया। इसमें स्थानीय लोगों के अलावा कुछ ओशो-प्रेमी चंडीगढ़ से भी आए थे।

ओशो नमन् ध्यान केन्द्र, चंडीगढ़ की संचालिका मा योग शुक्ला ने शिविर का संचालन किया। शिविर का शुभारंभ सक्रिय ध्यान से तथा समापन संध्या सत्संग के साथ सम्पन्न हुआ। दिन भर ओशो की विभिन्न ध्यान विधियों के प्रयोग किए गए।

नई दिल्ली

16, 17, 18 जून को ओशो धर्म ध्वनि ध्यान केन्द्र, लाजपत नगर-1, नई दिल्ली में बच्चों के लिए एक दिवसीय ध्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका संचालन मा आनंद नंदिता एवं स्वामी ध्यान सक्षिन ने किया। इसमें प्रत्येक दिन 20-30 बच्चों ने पूरे जोश, उत्साह और आनंदपूर्वक भाग लिया तथा सदगुरु ओशो के दिशा-निर्देश द्वारा खूब नाचे, मौन में डुबे व संगीत का भरपुर आनंद उठाते हुए ओशो ऊर्जा के साथ लयबद्ध होकर लगातार डुबते रहे।

देहरादून, उत्तरांचल

त्रिदिवसीय ध्यान शिविर